# शिव

मासिक




लेखक
महर्षि शिव बरत लाल वर्मन
एम.ए.

प्रकाशक
शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

# शिव के नियम

(१) शिव का उद्देश्य संत महात्माओं की अमृतवाणी द्वारा देश की सभ्यता व शिष्टाचार तथा सामाजिक, मानसिक शारीरिक आत्मिक स्थिति में सुधार करना तथा घर बैठे सत्संग का लाभ कराना है 'शिव' महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज व परमसंत फकीर चन्दजी महाराज के लेखों को विशेष रूप से प्रकाशित करता है।

(२) 'शिव' हर मास की प्रथम व द्वितीय तिथि को निकलता है इसका वार्षिक मूल्य ६) रु० है

(३) ग्राहकों को चाहिये कि पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर और अपना पता साफ-साफ लिखें उत्तर के लिये कार्ड आना जरूरी है

(४) यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न मिले तो पहिले अपने डाकखाने में पूछताछ करें यदि न मिले तो डाकखाने के उत्तर सहित पत्र आने पर एक हफ्ते के भीतर ही दूसरी प्रति भेज दीं जायेगी

(५) प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर 'शिव' के नाम आना चाहिये

(६) सम्पादक सम्बन्धी पत्र व्यवहार देवीचरन मीतल स० सम्पादक 'शिव' लेखराज नगर, अलीगढ़ के नाम करना चाहिये

मैनेजर—शिव साहित्य प्रकाशन मंडल
पोस्ट दयाल नगर (अलीगढ़)

## सूचना

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज तथा संतों की वाणी को दयाल मासिक पत्र, उर्दू में प्रकाशित करता है

पता—राधास्वामी जनरल सत्संग, हनम कुन्डा, (वारंगल, आन्ध्र प्रदेश-वार्षिक मूल्य ६।) रु०

'मनुष्य बनो' पत्रिका में संतों के बचन प्रतिमास प्रकाशित होते हैं वार्षिक मूल्य ४) ५०, पता–'मनुष्य बनो' कार्यालय लेखराज नगर, अलीगढ़

# * चमकदार मोती *

( ले० महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज )

—*—

स० सम्पादक—

देवीचरन मीतल

लेखराज नगर, अलीगढ़

—:*:—

सम्पादक, प्रकाशक—

नन्दू भाई

शिव साहित्य प्रकाशन

दयाल नगर, अलीगढ़

दिसम्बर १९७१ | सर्वाधिकार सुरक्षित | मू० १)

# विषय सूची


बाहरी टाइटिल पेज
शिव के नियम
**चमकदार मोती**
विषय सूची
प्रस्तावना
मंगलाचरन
भूमिका
कथारम्भ

**पहिला भाग**

पहिला अध्याय-राजपूतिनी माया
दूसरा " माया के सास ससुर
तीसरा " माया की सौत
चौथा " माया का पति
पांचवां " माया और ब्रह्मासिंह

**दूसरा भाग**

ब्राह्मणी माया
पहिला अध्याय—सास बहू
दूसरा " स्त्री पुरुष
तीसरा " माया—माया
चौथा " माया और घर का सुधार
पांचवां " माया और कमलावती रानी
छटा " कथा बाँचने वाला पण्डित

**तीसरा भाग**

पहिला अध्याय—दुख भंजन नाथ
दूसरा " तीर्थ वासी माया
तीसरा " तीर्थ बासी माया और दुख भंजन नाथ
चौथा अध्याय—शान्ति की खोज
पांचवां " क्लर्क बाबू

**चौथा भाग**

पहिला अध्याय—मां बेटे
दूसरा " ब्रह्मासिंह और उसकी मा
तीसरा " माया के दर्शन की इच्छा
चौथा " क्लर्क बाबू और उसका मालिक
पांचवां " बाप बेटे

**पांचवां भाग**

पहिला अध्याय—नन्देश्वर की कोठी
दूसरा " शंका निवारण
तीसरा " अन्तिम परिणाम
शब्द—शुकाना
नोटिस इत्यादि ।

R.S. Prakash Kirtunkar
House No. ...64
Gajulpet:- NIZAMABAD.

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेनमः ॥

# ❀ शिव ❀



| वर्ष १७ | पौष सं० २०२८ वि०<br>दिसम्बर १९७१ | तरंग १० |
|---|---|---|



## मनमाया का अंग

साधो सब मन की प्रभुताई ॥
मन ही आवे गरभ वास में, जननी गोद खिलाई ॥
मन ही धरै किशोर अवस्था, मन ही में तरुनाई ॥
मन ही नारी संग भरमाना, विषय भोग लपटाई ॥
मन ही सुत बनिता उपजाये, मन ब्यौहर कराई ॥
बृद्ध अवस्था मन ही जो व्यापी, भई आलस कुदराई ॥
मन नहीं मरे मारसब डारे, चिन्ता की आग जराई ॥
मन ही भजन ध्यान मन सुमिरन, मनही बुद्धि रहाई ॥
काम क्रोध मद लोभ फँसाना, मनमें मान बड़ाई ॥
मन का रूप लखे नहिं कोई, मन सब खेल खिलाई ॥
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मन का भेद जनाई ॥

# सूचना

अब हम इस अंक के साथ "चमकदार मोती" समाप्त कर रहे हैं। आगे के अंकों में परमदयाल महाराज के वह अमूल्य उपदेश होंगे ओ उन्होंने एक महात्मा को दिये।

महाराज जी का वसंत प्रोग्राम उनके स्वास्थ्य पर निर्भर है। यदि वे पूर्णतः यात्रा के योग्य स्वस्थ रहे तो यह कार्यक्रम पूर्ण कर सकेंगे और सम्भव है उसमें कुछ कमीवेशी हो जावे जिसमें वे अलीगढ़ का भी प्रोग्राम रख सकें। मैं इसकी सूचना १५ जनवरी के मनुष्य बनो के अंक में दी जावेगी। कृपया अपना "शिव" व मनुष्य बनो का चन्दा जिन्होंने अभी तक नहीं भेजा है तुरन्त भेजने की कृपा करें।

देवीचरन मीतल

# मेरा बसन्त का दौरा

मैं हर साल बसन्त के अवसर पर दौरे पर जाया करता हूँ। इस वर्ष का प्रोग्राम भी साथ ही दे रहा हूँ मगर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं। लगातार १½ महीने से जुकाम और खांसी के कारण बहुत कमजोरी है। डाक्टरों के खयाल में फेफड़े पर भी मामूली असर हो चुका है। खांसी और चुकाम अभी तक ठीक नहीं हुआ इसलिये मैं न आ सका तो तार या चिट्ठी के द्वारा जहां जहाँ मुझे जाना है और ठहरना है उनको सूचना दे दूँगा।

मित्रो और मेरे साहित्य के पढ़ने वालो! मैंने ३०-३५ साल से सत्संग कराने का काम किया है। मुझे कोई दावा नहीं और न कोई अहंकार है। जीवन सचाई पसन्द है। जीवन में जो अनुभव किया वह कहा।

यह तो सब जानते हैं कि यहाँ हमेशा के लिये किसी ने नहीं रहना है। मेरे हक में प्रार्थना कीजिये कि मेरे जीवन का परिणाम खैरियत से हो। मैं यह चाहता हूँ कि मालिक मानव जाति को सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक, सच्ची समझ, रोटी कपड़ा, रहने को घर और शान्ति दे।

आप लोग सोचते हैं कि मेरे बाद कौन काम करेगा। मैंने यदि कुछ किया होता तो मेरे बाद शायद कोई वह काम करता। मैंने तो किया ही कुछ नहीं, जो कुछ मैंने किया यथार्थ सत्यता के आधार पर है। मेरे गुरु भाई पीरेमुर्शा साहब या हरनाम सिंह जी यदि यहां रहकर या यहां ठहर कर मेरे जीवन में या मेरे बाद काम करना चाहें तो कर सकते हैं। श्री कृषक बुढ़ापे के कारण यहाँ से अपने घर चले गये हैं। आनन्द दयाल उर्फ नन्दलाल अभी तक मुलाजिमत

मैं हैं। मेजर जनरल जैसिंह रिटायर्ड जिनका ससबन्ध मेरे साथ प्रालब्ध कर्मों के कारण हुआ है उनको कह चला हूँ कि मानवता मन्दिर के ट्रस्ट को संभालते हुये उच्चकोटि के अधिकारी और और पढ़े लिखे लोगों को सचाई का मार्ग दिखलाते रहना। जनरल साहब वेदान्त के सिद्धान्तों के मानने वाले हैं। बाउसूल, परोपकारी, त्यागी और डिसीप्लिन के पक्के हैं। प्रकाश का साधन तो मेरे पास आने से पहिले हो किया करते थे और शब्द का साधन अब शुरू कर दिया है।

निर्वाण या आध्यात्म की अन्तिम अवस्था के अधिकारी तो बहुत कम हैं। इन्सानियत की आवश्यकता है। इंसानियत की शिक्षा के प्रचार में हर एक आदमी अपना हिस्सा डाल सकता है। पैसे के बिना भी काम नहीं चल सकता जो लोग यह समझते हैं कि मेरा काम सचाई पर है वह 'इन्सान बनो' की शिक्षा को प्रचलित रखने के लिये जो भी सहायता तन मन और धन से मानवता मंन्दिर की करना चाहें कर सकते हैं।

आपका—
फकीर

## दौरा प्रोग्राम बसन्त १९७२

| तारीख | स्थान | प्रस्थान | पहुँच |
|---|---|---|---|
| ८-१-७२ | होशियारपुर से | ५८ डा० | ११.५५ |
| | न्यूदहली | | २०-४० |
| ९-१-७२ | न्यूदहली से | २० डा० २१.२० | |
| १०-१-७२ | नागदा | | १३.३० |
| ,, | ,, से | ८७ अप०१५.०० | — |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ,, | उज्जैन | — | ८७ अप० १६.३५ |
| १४-१-७२ | ,, से | कार से | |
| १४-१७२ | इन्दौर | — | — |
| १५-१-७२ | ,, से | कार से | — |
| | उज्जैन | | |
| १६-१-७२ | ,, से | ८५ अप० १२-० | |
| १६-१-७२ | भोपाल | — | १७.३० |
| १६-१-७२ | ,, से | २०डा० ७.४५ | |
| २०-१-७२ | काजीपेट | — | १.१० |
| ,, | हनमकुंडा | कार से | |
| २३-१-७२ | हनमकुंडा से | कार से | |
| ,, | बारंगल | | |
| २४-१-७२ | ,, से | ,, | |
| ,, | सिकन्दराबाद | ,, | |
| २७-१-७२ | ,, से | २१ अप० १६.५५ | |
| २८-१-७२ | नागपुर | — | ७.५० |
| ,, | ,, से | १ अप० ११.३० | |
| ,, | दुर्ग | — | १६.२३ |
| १-२-७२ | दुर्ग से | ३० डा० ६.७ | |
| ,, | नागपुर | ;, १२.१५ | |
| ,, | ,, से | १५ अप० १५.१० | |
| ,, | इटारसी | ,, १५ अप० २१.२० | |
| ४-२-७२ | ,, से | ४ डा० ६.५० | |
| ;, | कटनी | — | १५.१० |
| ८-२-७२ | ,, से | ४८ डा० ४.३५ | |
| ,, | भदोई | — | १३.३४ |
| ,, | ,, से | कार से | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ,, | राधास्वामी धाम | — | | कार से |
| १४-२-७२ | ,, से खानपुर | ,, | | |
| २०-२-७२ | खानपुर से वाराणसी | कार से | | |
| ,, | वाराणसी से | ५ अप० | ६.५५ | |
| ,, | मुरादाबाद | ,, | २१.३५ | |
| ,, | विलारी | कार से | | |
| २३-२-७२ | विलारी से | कार से | | |
| ,, | मुरादाबाद | ३५१ अप० | ११.३५ | |
| ,, | सहारनपुर | — | | १६.० |
| ,, | ,, से सरसोंहेडी | कार से | | |
| २४-२-७२ | सरसोंहेडी से | कार से | | |
| ,, | सहाना | ,, | | |
| १-३-७२ | सहाना से | ,, | | |
| ,, | बरकली | ,, | | |
| ३-३-७२ | ,, से बनवारीपुर | — | | कार से |
| ५-३-७२ | बनवारीपुर से | — | | |
| ,, | दहली | कार से | | |
| ७-३-४२ | दहली से | ५७ अप० | | |

नोट—यदि परमदयाल जी की तबीयत ठीक रही उस समय ही यह प्रोग्राम रहेगा।

नाथ के शिष्य हो गये। यों तो उसके रोज के सत्संग में दोनों वक्त सैकड़ों आदमी रहा करते थे लेकिन इतवार के दिन सत्संग में हजारों की भीड़ भाड़ होती थी। जो आता था देखकर दंग हो जाता था। कई सन्यासी पंडित दुखभंजन से शास्त्रार्थ करने आये लेकिन चेलों ने उसके पांव उखेड़ दिये और वह पुष्कर तीर्थ का अकेला महन्त बन बैठा। अब वह इस धुन में पड़ा कि किसी तरह पुष्कर भी मेरे हाथ में आ जाये—मुकदमे किये, रिश्वतें दी, पंडितों के साथ फौजदारी की नौबत भी आई। इसमें तो उसकी दाल नहीं गली क्योंकि ब्राह्मणों का अधिकार सैकड़ों वर्ष से जमा हुआ था। और बातों में वह उस जगह बेतिलक का राजा बन बैठा और माया की भविष्य वाणी सच्ची हो गई।

बेचारे अघोरनाथ की जान आफत में थी। दुखभजन की नजर उस पर दिन रात रहने लगी। उसके अपने भी दस बीस चेले थे लेकिन यह भी धीरे-धीरे दुखभंजन के मठ में आ गये। जब कोई पूछता—'कहो अघोरनाथ क्या हाल है?' तब वह हँसकर जबाब देता—

'माया से माया मिले, लम्बे कर कर हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोइ न पूछे बात॥'

एक बार दुखभंजन के चेलों ने उसे मारते मारते अधमरा कर डाला और अपनी समझ में उसका काम तमाम कर दिया था। जीवन के दिन पूरे नहीं हुये थे, बच गया और वहाँ से भाग गया। अब दुखभंजन बेखटके अपना कार बार करने लगा।

ब्रह्मासिंह और क्लर्क बाबू माया के जाने के पीछे कुछ दिनों पुष्कर में रहकर दुखभंजन का सत्संग करते रहे। ब्रह्मासिंह समझता था कि सत्संग से उसका दुख कम हो जायगा लेकिन यह ख्याल गलत निकला। वहाँ तो माया ने अपना जाल बिछा रक्खा था। न भजन न भाव! न प्रेम न श्रद्धा! मठ के साधू घण्टा शंख बजाने आरती

उतारते और दस पांच गोरखनाथ और कबीर साहिब के भजन गाकर अपने सर का बोझ उतारते। इसी का नाम सत्संग रक्खा गया। दुखभंजन तो महन्त था। महन्त को इन बातों से क्या काम! वह सुबह उठता, नहाता, धोता, थोड़ी देर सहजयोग का साधन करता, फिर कारखाने के काम काज की देखभाल में लग जाता। उसे मिलने वालों ही से छुट्टी नहीं रहती थी। वह अपने कारखानों के बढ़ाने की नई २ युक्तियां सोचा करता था और इस धुन में रहता था कि उसके चेलों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जाये।

पढ़े लिखे लोग दो चार दिन ऐसी जगह रह सकते हैं और वह भी बड़ी कठिनाई से! यही इन दोनों की दशा हुई। जी उकताया और वहां से चलने की सूझी।

ब्रह्मासिंह ने कहा—'अब यहां जी नहीं लगता।'

क्लर्क—'जी कैसे लगे! जी लगने का कोई सामान भी तो हो या यों ही दिल लगने लगा!'

ब्रह्मासिंह—'फिर अब क्या करना चाहिये?'

क्लर्क—'यहां से डेरा डंडा कूच हो और किसी दूसरी जगह चलिये।'

ब्रह्मासिंह—'जी चाहता है कि देहली चलें।

क्लर्क—'क्या आये और क्या चले! लोग क्या कहेंगे? आये हैं तो कुछ दिन तो सैर तफरीह करली जाये।'

ब्रह्मासिंह—'जो सुख चौबारे ना बलख ना बुखारे। सफर में तकलीफ है। आराम घर ही में मिलता है।'

क्लर्क स्वार्थी था। सब को स्वार्थ साधन की पड़ी रहती है। वह सोचता था 'जितने दिन सफर में हैं और नहीं तो नौकरी तो है। बँधी हुई तनख्वाह मिलती है—खाने पीने का घर से बढ़कर सुख है और सैर सपाटे का आनन्द सब से बढ़कर! कौन जाने देहली में चलकर यह नौकरी रहे या न रहे! यह बेकार है काम काज हो

जाता तो कुछ आशा बँधती । घर पहुँचते ही नौकरी गायब ।' इन सब बातों को सोचकर उसने सफर जारी रखने की राय दी । ब्रह्मा-सिंह पढ़ा लिखा अवश्य था लेकिन तजुरबा भी कोई चीज होती है । यह पढ़ने लिखने से नहीं आता । वह क्लर्क बाबू की नीयत को न भांप सका ।

क्लर्क ने बातों की जाल में उसे फँसा लिया । वह अजमेर आये वहां से जयपुर गये, शहर देखा और शहर के सामान देखे । जयपुर हिन्दुस्तान भर में सब से खूबसूरत शहर है । शहर क्या है ! शतरंज की विसात है । जिसने इसे आबाद किया होगा बड़ा ही बुद्धिमान इन्जीनियर रहा होगा । शहर तो अपने ढंग का अद्वितीय है लेकिन शहरियत से एक दम खाली । शाहजहानाबाद और देहली की बुनि-याद शाहजहां बादशाह ने बहुत सोच समझ कर डाली थी । बादशाह ने उसे खूबसूरत बनाने में अपनी सारी ताकत लगादी थी । फिर भी जयपुर का शहर उससे बाजी मार ले गया । जो बात जयपुर में है वह देहली में नहीं है । वह यहां कैसे आ सकती थी ! देहली में शहरियत है और वह अपने ढंग की लासानी और लामिसाल है । यहां तक कि कलकत्ता और बम्बई तक इस बात में उसका मुकाबला नहीं कर सकते । मद्रास भी बहुत आबाद शहर कहलाता है । बम्बई हिन्दुस्तान में युरोपियन शहर है । मद्रास में इन दो बातों में से एक भी नहीं है ।

जयपुर से होकर यह करौली गये । आबू पहाड़ पर कुछ दिनों ठहरे । वहां कुछ दिन लगा । एक तो जैनियों का मन्दिर यहां विचित्र है जो ताजगंज के रौजे के बाद लाजबाब इमारत है । यह दोनों कई दिनों तक उसकी बनावट सजावज और बेल बूटों के काम को देखकर अपना जी बहलाते रहे । जब यहां से जी भर गया, जोधपुर गये । वहां जी नहीं लगा ।

फिर उदयपुर पहुँचे । शहर तो वह मामूली कस्बा है लेकिन

शाही महल, झील और किले इत्यादि देखने के योग्य हैं। कुछ दिन वहां बसर किया, फिर चित्तौड़ आये। राजाओं का किला देखा जिसके जिक्र से तवारीखें भरी पड़ी हैं। यहां आकर चित्तौड़ की सारी घटनायें आंखों के सामने बाइस्कोप की तस्वीरों की तरह आने लगी। इस उजाड़ जगह में उसका जी लग गया। दिल में उमंग और हौसला पैदा हुआ। राजस्थान में यह सब से मशहूर जगह है। क्या मजाल कि कोई यहां आये और उस पर इन घटनाओं का प्रभाव न पड़े लेकिन बेकार आदमी बहुत दिनों तक कहीं नहीं रह सकता। यहां आये अभी दस दिन भी नहीं हुये थे कि देहली से ब्रह्मासिंह के बाप की बीमारी का तार आया। उसने उसी समय वहाँ से चल देने का विचार किया लेकिन क्लर्क बाबू ने उलटी सीधी बातें सुनाकर फिर रोक दिया। उसने कहा—'घरों में लोग बीमार रहा करते हैं। यह मामूली बात है। इसके लिये घबराना कैसा!' वह दो दिन ठहर गया। तीसरे दिन पिताजी के स्वर्गवास होने का तार पहुँच गया।

क्लर्क तो फिर भी उसे रोक लेना चाहता था लेकिन था बड़ा सयाना, सोचा कि बाप के मर जाने से खर्च का आना कहीं बन्द न हो जाये। इसलिये इस बार रोक न सका। वह नहीं जानता था कि जायदाद की वसीयत उसकी स्त्री के नाम हो गई है नहीं तो वह और चाल चलता और उसे कुछ दिनों और बाहर रोक रखता।

दोनों उसी दिन चित्तौड़ से चल खड़े हुये और १३ दिन पीछे देहली पहुँचे। अपने रवाना होने का तार तो मां के नाम भेज दिया था लेकिन यह नहीं लिखा था कि किस दिन देहली पहुँचेंगे। इसलिये स्टेशन पर कोई आदमी उतारने के लिये नहीं आ सका था।

# चौथा भाग

## पहिला अध्याय

### माँ बेटे

बाप का क्रिया कर्म बेटे के आने से पहिले ही हो चुका था। विचार था कि उसकी लाश तेल में रख दी जाये और लड़के के आने पर उसका दग्ध-संस्कार हो। पड़ोस वालों ने इस बात को पसन्द नहीं किया। ब्रह्मासिंह का बाप देहली का रहने वाला नहीं था। और किसी जगह से आकर वह यहाँ आबाद हो गया था। दग्ध-कर्म का अधिकार बेटे को है। बेटे के न रहने पर कुटुम्ब के और लोग इस कर्म को करते हैं। वहां उसका कोई सम्बन्धी भी नहीं था। ऐसी अवस्था में ब्रह्मासिंह की मां को ही दग्ध संस्कार करना पड़ा। ब्रह्मासिंह को आशा थी कि वह दसवें से पहिले आ जायेगा लेकिन यह न हो सका। वह बाप के मरने के चौदहवें दिन देहली में आया।

माँ के सर पर तो दुख का पहाड़ ही टूट पड़ा था। बेटे को देखकर उसे दुख भी हुआ और उसका कलेजा प्रेम से उमड़ भी आया। वही उस घर का चिराग था। दोनों रोये चिल्लाये लेकिन इससे होता क्या है! मरने वाला मर जाता है। रोने वाले दो चार दिन रो पीटकर चुप हो जाते हैं और उसे धीरे-धीरे भूल ही जाते हैं। चुप न हों तो करें क्या?' मरने जीने पर किसका अधिकार है।

दिन, सप्ताह और महीने बीत गये। घर में माँ अकेली थी। माया वहाँ नहीं थी। ब्रह्मासिंह ने कई बार पूछना चाहा लेकिन साहस न हुआ। घर के नौकरों से पता लगा कि वह बनारस अपने बाप के घर चली गई है और उसे गये हुये नव दस महीने हो गये हैं।

माँ का विचार था कि ब्रह्मासिंह अपनी स्त्री के विषय में उससे कुछ पूछ गछ करेगा लेकिन वह समझ गई कि अभी तक बेटे का दिल बहू की ओर से साफ नहीं है। एक दिन उसने आप ही छेड़-छाड़ कर दी।

'कैसे शोक की बात है कि तेरे बाप के मरने के समय न तो तू यहाँ था और न वह ही घर में थी। वह भी पास होती तो कम से कम मुझे बहुत कुछ ढारस रहती।'

'वह यहाँ से चली क्यों गई ?'

'तेरे वियोग से वह घबरा गई थी। उसके बाप ने बुला भेजा और हम लोगों ने भी यही उचित समझा कि वह बनारस जाकर अपना दुख भूल जाये।'

'जब पिता जी बीमार पड़े तो फिर उसे बुला क्यों न भेजा ?'

'वह उसे अपनी आंखों के सामने दुखी देखना नहीं चाहते थे। वह उसे बहू नहीं कहते थे बल्कि घर की लक्ष्मी समझते थे। वह उनकी दृष्टि में साक्षात् देवी थी। स्त्री पुरुष एक दूसरे को प्यार करते हैं। माँ बाप लड़कों को अपनी आंख का तारा समझते हैं लेकिन किसी ससुर को बहू का इतना सच्चा प्रेम न आंखों देखा न कानों सुना। तेरे बाप ने इसे कर दिखाया। वह कभी-कभी तेरी तो शिकायत करते थे लेकिन मैंने बहू की शिकायत उनके मुँह से कभी नहीं सुनी।'

'इसका कारण ?'

'बहू की योग्यता, सभ्यता, सेवा सत्कार का भाव और सच्चा प्रेम ! घर में नौकर चाकर तो कई पीढ़ी से चले आते हैं लेकिन जो आराम हम दोनों को बहू से मिला कभी स्वप्न में भी नसीब नहीं हुआ था। ईश्वर जाने वह किस ऊँचे लोक की देवी है !'

'क्या तू भी पिता जी के साथ सहमत थी ?'

'क्यों नहीं ? सच्ची बात तो सभी को माननी पड़ती है। वह

उससे बात चीत नहीं करते थे न उसने कभी उयके सामने जुबान खोली लेकिन बहू ने हम दोनों को अपनो मुट्ठी में कर लिया था।'

'अपना अपना विचार है।'

'हाँ ! है तो कुछ ऐसा ही ! आश्चर्य इस बात का है कि तूने उसकी कदर नहीं की। सास बहू में तो अनबन होती रहती है। स्त्री पुरुष मिले जुले रहते हैं लेकिन मैंने कभी आधी बात भी बहू को नहीं कहा और वह बेचारी तो बेजुबान थी। वह क्या कहती ! पता नहीं तू उससे क्यों इतना चिढ़ता है !'

'क्या उसने कभी तुझ से मेरी शिकायत की थी ?'

'राम राम ! ऐसा कभी मत सोचो। बहू के स्वभाव का आदमी होना महा कठिन है। चार-चार पांच-पांच वर्ष का दिन बीत जाये और नौकर चाकर तक को भाँपने का अवसर न मिले कि बहू बेटे में अनबन है। तपस्वनी की तरह रहती थी लेकिन बराबर गुलाब के फूल की तरह खिली रहती थी और हम दोनों उस पर जान देते थे।'

'फिर तुझे कैसे पता लगा कि हम दोनों में अनबन है ?'

'चल बावले ! बात पूछता है और बात की जड़ पूछता है ! क्या मुझे इतनी भी बुद्धि नहीं है कि तुम दोनों की भांप न सकती। कभी कभी मैं आप उसे छेड़ देती थी लेकिन मुस्कराहट के सिवा कुछ जबाब तक न देती थी।'

'आश्चर्य है !'

'इसमें क्या सन्देह है ? तेरी बहू तो किसी मन्दिर में देवी बना कर रक्खे जाने के योग्य है। लोग आयें उसकी पूजा करें लेकिन मूर्तियां तो पत्थर की होती हैं। वह हड्डी मांस और चमड़े की है। वह कैसे अपने आप को रोक रखती थी यह एक रहस्य है जो मेरी समझ से बाहर है।'

'कुछ नहीं ! वह तुम दोनों की सेवा करती थी इसलिये तुम ऐसा

है। तू नहीं जानता—रामचन्द्रजी और कृष्णजी महाराज जो हिन्दुओं के मुख्य अवतार हैं सांवले ही रंग के थे जिनके सौन्दर्य को देखकर अप्सरायें और देव कन्यायें तक मोहित हो जाती थीं। बहू हर तरह से अच्छी और गुण ढग वाली है। अब तो उसका रंग और भी खुल गया है। पहिले उसे देख ले फिर मेरे साथ बात-चीत करना।'

'तू मुझे धोखा देना चाहती है।'

'राम राम ! बेटे तू यह क्या सोच रहा है ? बेदर्द से बेदर्द मां बाप कभी अपने इकलौते बेटे को धोखा नहीं देंगे। तुझे कोई भ्रम हो गया है वरन् ऐसी बहकी बहकी बातें कभी न करता। तेरे सिवा हमारे आगे पीछे कौन है ? हम दोनों ने तेरे सामने बहू की बात-चीत जो नहीं छेड़ी उसका कारण यह था कि तू और भी उस पर क्रोध करता। तूने अपने धर्म का ध्यान नहीं रक्खा। यह महा पाप है जो तुझे अशान्त बनाये हुये है।'

'यह कैसे ?'

'माँ बाप जब बूढ़े होते हैं उनका साहस और उत्साह कम हो जाता है। वह अपनी सन्तान की इज्जत में इज्जत और उसी की खुशी में अपनी सच्ची खुशी समझते हैं। अगर तू अपने धर्म का ध्यान रखता तो आज हमारा घर बाल बच्चों से भरा रहता। तेरा बाप यह हौसला अपने साथ ही ले गया। मैं अब अकेली रह गई हूँ। मेरी लाज ईश्वर के हाथ है।'

ब्रह्मासिंह का दिल भर आया। वह चुपका रहा। मां फिर बोली:—'जिस बहू की तू बुराई कर रहा है उसकी समझ बूझ और योग्यता को देख ! मुझ से कहला सुनवा कर अपने ससुर को समझाया बुझाया और लिखा हुआ वसीयत नामा अपनी ओर से तेरे नाम करवा दिया, उस पर तेरे बाप की गवाही तक लिखाकर रजिस्टरी करा दी। आई हुई जायदाद को कौन किसी को देने लगा। वह चाहती तो जायदाद को अपने नाम रखकर मुझ को और तुझ को

अपने आधीन बना रखती ।'

मां उठी, कमरे में गई, सन्दूक खोला, वसीयतनामा उठा लाई और बेटे के हाथ में रख दिया । उसकी पीठ पर लिखा हुआ था:—

'मैं इस वसीयत नामा और वसीयत नामे के सारे हुक्कू को बिला किसी शर्त के बदुरुस्ती होश हवास अपने पति ब्रह्मासिंह के नाम मुन्तकिल करती हूँ

दस्तखत माया देवी बकलम खुद"

ब्रह्मासिंह की आँखें अब जाकर खुलीं । उसे पता लग गया कि स्त्री क्या है देवी है । आंखों में आँसू भर आये, आँसू पी गया और अपने आपको सँभाल लिया । आदमी ही तो था उसका दिल कैसे न पिघलता ! मां ने उसकी सूरत देखी और प्रसन्न होकर कहने लगी:—

'क्या अब भी तुझे बहू की शिकायत है ?'

'नहीं इस वसीयतनामे की बाबत तो मुझे कभी कोई शिकायत नहीं थी ।'

'फिर अब तू क्या चाहता है ?'

'जो तू हुक्म देगी वह मेरे सर आखों पर रहेगा ।'

'मैं तो यह चाहती हूँ कि तुम दोनों प्रसन्न रहो । दूधों नहाओ और पूतों फलो । इससे तेरे बाप को स्वर्ग में शान्ति मिलेगी और मैं जीते जी बैकुण्ठ का सुख भोगूँगी । आधा शरीर मेरा स्वर्ग को गया आधा पृथ्वी पर है । जीते जी तुझे फूलता फलता देखूँ । इकलौते बेटे की माँ इसके सिवा और क्या चाहती है ।'

'फिर तू क्या हुक्म देती है ?'

'इस पर कल बात-चीत करूँगी ।'

# दूसरा अध्याय

## ब्रह्मासिंह और उसकी मां

ब्रह्मासिंह जब रात को सोने गया, मां की बातों पर विचार करता रहा। मन की भी विचित्र दशा है! उसने अपनी भूल आप मान ली। दूसरे दिन सवेरे उठा, नहाया धोया और सैर करने गया। लौटकर खाना खाया। पहिले घर के काम काज की ओर ध्यान नहीं देता था। अब वसीयत नामा देखने से उसका भाव बदल गया। दोपहर को माँ बेटे फिर कमरे में मिले।

ब्रह्मासिंह ने कहा—'मां! अब तक मैं अल्हड़ बना हुआ था बाप के रहने से हर तरह की बेफिक्री थी। यह नहीं जानता था कि इतनी जल्द वह हमारा साथ छोड़ देंगे। ईश्वर की इच्छा! अब इस सोच में हूँ कि किसी तरह कोई सरकारी नौकरी मिल जाये। पहिले तो इधर ध्यान भी नहीं था नहीं तो अच्छी से अच्छी जगह पिता जी की कृपा से मिल जाती। अब कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।'

'यह जरूरी नहीं है कि तू नौकरी करता फिरे। बाप ने काफी जायदाद छोड़ी है। रुपये पैसे भी बैंकों में जमा हैं। तू उनसे कार-बार कर सकता है। वकालात भी पास कर चुका है। इस पर फिर कभी सोचना। मैं कई दिन से किसी और ही सोच विचार में पड़ी हूँ।'

'वह क्या है?'

मैं यह चाहती हूँ कि देहली को सदैव के लिये छोड़ दूँ और बनारस चलकर रहूँ।'

'क्यों?'

'तेरे बाप के मर जाने से दिल टूट गया। यहां किसी ने पूछा तक नहीं। जब तक वह जीते थे लोग सुबह शाम हाजिरी दिया

करते थे। मरने के दिन किसी की सूरत दिखलाई नहीं दी। और आता कौन ! यहां तो अपने कुल या गोत्र का कोई आदमी भी नहीं है। बनारस में उनके कई सम्बन्धी हैं जिन्होंने तेरा विवाह ठीक कराया था। कम से कम वहाँ मेल जोल के दो चार आदमी तो होंगे। दूसरे मैं बनारस में कुछ दिनों रहकर अपना शरीर त्याग करना चाहती हूँ। कौन जाने कब मृत्यु का समय आ जाये !'

ब्रह्मासिंह हँसा—'यह ख्याल तुझे किसने दिलाया ?'

'बहू के सिवा दुनिया में मुझे सलाह देने वाला कौन है ! उसने खत में लिखा कि देहली का रहना छोड़ कर बनारस में आबाद हो जाओ। वहां बहू के बाप ने राजा शिवनरायन सिंह की जायदाद खरीदने की बात चीत कर रक्खी है। तुझ से पूछने की देर थी क्योंकि देहली की सारी जायदाद तेरे नाम है। मैं तो चाहती हूँ कि सब की सब बेच दी जाये और बनारस में इसके बदले दो चार दस गांव मोल ले लिये जायें और हम सब मिल जुलकर वहां ही रहें !'

'लेकिन अगर मैं राजी न हुआ तब ?'

'तब तुम स्त्री पुरुष यहां रहना। मैं अकेली काशी-वास करूँगी।'

'यह काम जल्द तो नहीं होगा। इसमें देर लगेगी।'

'मैं जानती हूँ। बहू ने वकील की मारफत यहां की जायदाद के बचने का प्रबन्ध कर लिया है। तेरी सलाह लेनी थी।'

'तेरी बहू क्या है जादू का पिटारा है। बड़ी सिद्धि शक्ति वाली है। हर काम में उसने घुस पैठ मचा रक्खा है।'

'वह ऐसी ही है। अगर ऐसी न होती तो कौन जाने तू और कितनी आपत्तियों में फँस जाता। बहू ने तुझे उनसे बाल-बाल बचा लिया और किसी को कानों-कान खबर तक न होने दी वरन् तेरे बदनाम होने में कोई कसर नहीं थी !'

ब्रह्मासिंह हँसा—'मैं तेरी बहू की करामात को नहीं जानता।'

'आज नहीं तो कल जानेगा। तुझे पता नहीं है तेरे पीछे देहली

में क्या-क्या बातें हुई ! तू एक दम सीधा सादा है। बहू चारों ओर आंख रखती है ।'

'चल बावली ! कहती क्या है ? न जिसका सर न पैर !'

'क्या सचमुच तू इतना अल्हड़ है ! सुन—तूने किसी जौहरी से हीरे पन्ने खरीदे थे। तेरे जाते ही शोर मचा। बाप को कुछ पता तक नहीं था। वह बेपरवाह भी थे। उनको विश्वास नहीं था कि तू आठ हजार के जवाहिरात बिना उनकी सलाह के कभी मोल ले लेगा। वह इसे अन्त समय तक झूँठ समझते थे। बहू समझदार थी। वारंट निकलने पर उसने वकील को बुलवाकर बात-चीत की और बनारस चली गई। वहाँ से दस हजार रुपया अपने बाप से लेकर वकील की मारफत जौहरी को दिलवाया। अगर ऐसा न करती तो तू सफर से पकड़ा हुआ आता और बदनामी होती। वारन्ट तेरे पास तक नहीं गया। यह सब उसी की बुद्धिमानी थी। तेरे बाप दंग थे। उनको आज तक पता नहीं लगा कि यह जवाहिरात तूने किस के लिये मोल लिये ! बहू ने इस पर और भी परदा डाला रक्खा था।'

ब्रह्मासिंह के कान खड़े हुये। उसने चौदह अँगूठियां बनवाई थीं। सात उनमें से सादी थीं। और सात में बहुमूल्य हीरे जड़े हुये थे जो उसने पन्नामल जौहरी से लिये उधार थे। वह इसे एक दम भूल गया था। उधार लेते समय विचार था कि झट पट दे दिया जायेगा लेकिन उसके सफर में चले जाने से जौहरी को खटका हुआ और उसने दीवानी में नालिश दायर कर दी। देहली आने पर भी किसी ने यह बात उससे नहीं कही थी। अब तो वह अपनी स्त्री की प्रशंसा मन ही मन करने लगा। अधिक बात-चीत करने में भांडा फूटने का डर था लेकिन वह समझ गया कि माया उसकी एक-एक बातों को जानती है।

उसने माँ से हँस कर कहा—"तेरी बहू मिलेगी तब मैं उससे आप सब कुछ पूँछ लूँगा।'

माँ की आखें खिल गईं—'मालिक को धन्यवाद है कि बहू से मिलने का शब्द तो तेरे मुँह से निकला। मैं इतना ही सुनकर प्रसन्न हो गई। अब मैं समझ गई कि तू कदर करेगा। मुझे सन्देह है कि बहू ने अपने बाप से रुपये नहीं लिये। लिखने को तो ऐसा ही लिखा है पर ऐसा प्रतीत नहीं होता। उसने अपने दो चार थान, जेवर बनारस जाकर बेचे होंगे। यहां बेचने में बदनामी और हँसी होती। इसीलिये वह झटपट बनारस चली गई और वहां से रुपये का प्रबन्ध करा दिया। तेरे बाप के वकील को पता है लेकिन बहू ने उसे ताकीद कर रक्खी थी कि तेरे बाप को यह सब पता न लगने पाये। मैं भी पूरा हाल नहीं जानती। जब मुक़दमा ख़ारिज हो गया तेरे बाप मुझसे कहने लगे कि ब्रह्मासिंह से कभी ऐसी उम्मीद नहीं थी, मुक़दमा किसी ग़लती से चलाया गया था, इसलिये ख़ारिज करा दिया गया।"

ब्रह्मासिंह चकित था। क़र्ज़ का लेना तो सच था बाक़ी और बातें उसकी समझ में नहीं आईं। उसका रुपया बैंक में अपने नाम जमा था। सफर के झमेले में वह कर्ज का अदा करना भूल गया था। उसने पूछा:—

"यह मुक़दमा कब हुआ था ?"

माँ ने तारीख और महीना बताया। उसने दिलही दिल में सोचा—'उस समय वह पुष्कर में था और जिस तारीख को रुपया अदा किया गया था वह जयपुर में रहा होगा।'

'तेरी बहू बनारस कब चली गई ?'

तुझे गये हुये अभी दस दिन भी नहीं हुये थे कि नालिश दायर हुई। उसके दो चार दिन पीछे वह यहाँ से चली गई।'

'बनारस से कोई बुलाने आया था या वह आप चली गई ?'

'बुलाने कोई नहीं आया। हाँ ! उसके बाप के ख़त पत्र आते रहते थे। बहू ने बीमारी का बहाना लिखा। बाप ने बनारस आकर दवा इलाज करने की राय दी। फिर वह मुझ से और तेरे बाप से आज्ञा लेकर यहाँ ने उसी दिन चली गई।'

'क्या उसका विचार यहां जल्द आने का नहीं है ?'

'नहीं ! वह जल्द आना नहीं चाहती और तू समझ सकता है कि वह यहां आकर क्या करे ? अभी तक उसे यह भी पता नहीं है कि तू सफर में है या देहली आगया है ? पत्थर पड़े मेरी बुद्धि पर ! तुझे आये इतने दिन होगये और मैंने चार दिन हुये उसे अब खत लिखा है।'

'क्या पिता जी के मरने का उसे पता है ?'

'बेटे ! तू कैसा हो गया है ? वह कैसे न जानती। वही तो घर की मालिक है। उसे पता न देती तो देती किसे ! वहां से दसवां के दिन आदमी भी आया था।'

'फिर वह देहली क्यों नहीं चली आई ? उसे अब तक आजाना चाहिये था। मैं न था तो न सही ! तू अकेली थी। तेरा ध्यान तो उसे होना चाहिये था।'

'इसमें उसका दोष नहीं है। मैंने आप उसे यहां आने से रोक दिया था। वह देहली में तो अच्छी थी। बीमारी का बहाना यहाँ से जाने के लिये था। वहां जाकर उस का जी बिगड़ गया। मैंने आने से रोक दिया। वह देखने के लिये तड़प रही है लेकिन है आज्ञाकरी ! मेरा हुक्म मानती है। और मैंने कुछ समझ बूझकर रोक रक्खा है।'

'रोकने का कारण क्या है ?'

माँ दो चार मिनिट सोचकर बोली—'उसकी बीमारी तेरा यहां न रहना, मेरा दुख ! मैंने पसन्द नहीं किया कि बहू ऐसी हालत में यहाँ आये। मां बाप के घर उसे यहाँ से बढ़कर सुख और आराम है।

'अब तेरा विचार बनारस जाने का कब है ?'

'जब चलने पर राजी हो। मैं अकेली तो नहीं जाने लगी। नई जगह ! न किसी से जान न पहिचान। समझाने का वास्ता ! तू साथ रहेगा तो दूसरी बात है। तू मर्द है। सब जगह आ जा सकता है।'

'वहाँ कहां ठहरेगी ?'

'यह सवाल बड़ा अच्छा है। इतना बड़ा शहर ! क्या रहने के लिये कोई मकान न मिलेगा ! समधी के घर तो मैं रह नहीं सकती हूँ। समधी और समधिन भी मेरे पास न आयेंगे। पूरब में ऐसा ही दस्तूर है। हां ! तू उन के घर जा सकेगा। वहू कभी कभी मेरे पास आकर रहेगी और कभी अपने मां बाप के पास रहेगी।'

जायदाद के बेचने और नई जायदाद के मोल लेने में तो बहुत दिन लगेंगे। यह काम महीनों बल्कि वर्षों का है। इन्तजाम करते करते समय लग जाते हैं। तू बनारस जल्द जाना चाहती है या अभी वहाँ जाने में कुछ देर है ? और अगर जल्द जाना चाहती है तो वहां से कब आयेगी या वहीं मकान खरीद कर रहेगी ?

'आज तो तू मुझ से वकील तरह की जिरह करने लगा। मैं तो देहली से घबरा गई। तेरे बाप जीते होते तो और बात थी। अब वह तो हैं ही नहीं। मैं किस का मुँह देखकर यहां रहूं और किस मुँह से रहूं !'

मां की आंखों से आंसू बहने लगे। ब्रह्मासिंह का जी भी भर आया।

'तू सच कहती है। मां अगर तू आज बनारस चलना चाहती है तो मैं तैयार हूँ। तू जो हुक्म देगी उसे सर आँखों पर रखूँगा।

मेरे अल्हड़पने के दिन आज पूरे होगये। आज से मैं तेरी सेवा और आज्ञा पालन का ध्यान रखूँगा। बहू पराये घर की लड़की होकर जब इतनी सेवा करती है तो मुझे तो उससे हजारगुना ज्यादा करना चाहिये। मैं तेरा लड़का हूं। वह तेरी लड़की नहीं है। यहाँ का प्रबन्ध बहुत अच्छा है और घड़ी के पुरजों की तरह ठीक ठीक चल रहा है। इधर से इतमीनान है। मैं हर तरह तेरा हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ।"

"तब मुझे बनारस ले चल। जब मैं बहू को तेरे साथ देखूँगी मेरा कलेजा ठंडा हो जायेगा।"

दूसरे ही दिन वह बनारस चल दिये।

---

# तीसरा अध्याय

## माया के दर्शन की इच्छा

हिन्दू कहते हैं कि दुनिया मन माया का तमाशा है। यह दोनों बराबर खेलते रहते हैं और इन्हीं के खेल का नाम संसार है।

मुसाफिर कलकत्ता मेल में बैठे—मां बेटे क्लर्क बाबू और दो बाँदियां साथ थीं। मां बेटे तो सेकेन्ड क्लास में थे। बाकी तीन नौकर के डिब्बे में थे। कलकत्ता मेल की चाल और गाड़ियों से तेज है। बारह घण्टे से अधिक नहीं लगे और यह दूसरे दिन इलाहाबाद होते हुये मुगलसराय पहुँचे। वहाँ उतर कर दूसरी गाड़ी में बैठे जो बनारस पहुँचाती है। पांच बजे यह गाड़ी उन्हें बनारस कन्टून्मैन्ट में लाई। स्टेशन पर बहुत से लोग पहिले ही से उसे लेने के लिये

आगये थे। इनमें माया (बहू) और दो तीन बांदियाँ भी थीं। माया की गोद में दो तीन महीने का एक बच्चा था। मरदों में ब्रह्मा का ससुर था। दो चार उसके सम्बन्धी और नौकर चाकर भी थे।

रेल से उतर कर सास बहू मिलीं। बहू पांव पर गिरी। सास ने अपनी छाती से लगा लिया। दोनों की आंखों से आंसू के तार बह निकले जिसे रोकना ही पड़ा। ऐसे ही ससुर और दामाद भी मिले लेकिन वह प्रेम जो सास बहू में था ससुर दामाद में कहां! यहां तो उसका हजारवां हिस्सा भी नहीं था। ससुर दामाद का सम्बन्ध दुनिया में बहुत बुरा है। कौन जाने यह दुनिया कब से है! सास बहू तो मिल जुलकर रहती है। इसका उदाहरण माया ने दिखला दिया लेकिन सास दामाद या ससुर दामाद में यह प्रेम कहीं भी देखने में न आया और न आयेगा। सास चाहे दामाद को प्यार भी करती हो लेकिन दामाद की आंखों में सास कांटे की तरह खटकती रहती है। ससुर और दामाद में यह बात नहीं देखी जाती। यह मिलते जुलते हैं और एक दूसरे के अदब और आदर सत्कार का ध्यान रखते हैं। मिलने वाले मिले मोटरों पर सवार हुये और दस मिनट पीछे बड़ी पियरी के मुहल्ले में पहुँचे जहाँ एक बड़ा बँगला चन्द्र प्रभा प्रेस के पास ही किराये पर लिया गया था। हिन्दुस्तानी ढंग पर इसकी सजावट अच्छी थी।

स्त्रियां मोटर से उतर कर जनाने कमरे में चली गईं। माया ने अपनी गोद के बच्चे को सास के पांव पर डाल दिया। उसने उसे उठा लिया, गालों को थपथपाया। मुँह को चूमा, प्यार किया और रोने लगी। ईश्वर जाने उसके मन में इस समय क्या क्या भ. आये होंगे और वह किस लिये रोई होगी लेकिन यह रोना हँसी खुशी का था। खुशी के समय भी आदमी रो देता है और स्त्रियां तो इसमें बड़ी ही बढ़ी चढ़ी और निपुण होती हैं। फिर वह फर्श पर बैठीं, बातें करने लगीं। मर्द भी इसी तरह बैठक में आकर ठहरे।

पान तम्बाकू और इलायची बांटी गई।

थोड़ी देर पीछे मुसाफिरों ने नहाया धोया, राह की थकावट दूर हुई, बाजार से खाने पीने का सामान मँगवाया गया। सब ने मिलकर खाना खाया। देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। शाम होगई। माया के घर वाले लोग गये। सास चाहती थी कि बहू उसके पास रहे लेकिन उसने रोकना उचित न समझा। वह भी अपने बाप के साथ चली गई और दूसरे दिन आने का वाइदा कर गई।

दूसरे दिन सूर्य निकलते ही देहली वालों ने नहाया, धोया। बनारस में चाय पीने का रिवाज कम है। हां! खोमचे वाले ताजी ताजी जलेबी लाते हैं। उसके जलपान का रिवाज है। सब ने जलेबियाँ खाईं। बनारस आने से यह लोग खुश थे क्योंकि एक तो यह बड़ा शहर है, दूसरे हिन्दू धर्म का मजबूत किला समझा जाता है। हिन्दू ही क्यों जैन, बोद्ध सभी इसे अपना पवित्र तीर्थ समझते हैं। हिन्दुओं के विश्वनाथ जी का मन्दिर सारे हिन्दुस्तान में मशहूर है। बौद्धों का तीर्थ सारनाथ में है जहां चीन, जापान, स्याम, अनाम, कम्बोडिया, लका, तिब्बत, मनचूरिया, कोरिया और पूर्वी रूस तक के बौद्ध यात्री आया करते हैं। इसी सारनाथ में जैनियों का भी एक पुराना मन्दिर है जिसके दर्शन के लिये लोग बहुत दूर दूर से जाया करते हैं।

दूसरे दिन बहू उसी लड़के को गोद में लिये हुए आई और सास को उसकी बाँदियों के साथ गंगा स्नान और विश्वनाथ जी के दर्शन को लेगई। ब्रह्मासिंह ने गंगा स्नान के लिये न गया न उसे विश्वनाथजी के दर्शन ही का ध्यान था। वह किसी और ही धुन में था। जब सब लोग बारह बजे दिन के समय लौट आने का वाइदा करके चले गये उसने क्लर्क बाबू को साथ लिया। उसके ससुर ने अपना खास आदमी शहर के दिखाने और सैर कराने के लिये

इनके पास भेज दिया था। यह तीनों पैदल ही निकले, कबीर चौरा पर गये, समाधि का दर्शन किया, इधर उधर घूमे फिरे और पंडित ब्रह्मशङ्कर जी महाराज की समाधि भी देखी जो कबीर चौरा के ही मुहल्ले में बनी हुई है। इसके सिवा और भी मशहूर मशहूर इमारतों को देखा भाला। नौकर से बहुत सी बातें पूछीं। उसने सब कुछ दिखाया, सब कुछ सुनाया लेकिन ब्रह्मासिंह को जिसकी खोज थी उसका पता नहीं लगा। वह बारह बजे से पहिले अपने डेरे पर लौट आया। वह उदास और निराश था। उसने अपने ससुर के नौकर से पूछा :—

'बड़ी पियरी इसी मुहल्ले का नाम है ?'

'हाँ ! इस मुहल्ले का यही नाम है।'

'यहां कायस्थ खानदान का कोई बड़ा घराना भी रहता है ?'

'यहां एक दो क्या सैकड़ों कायस्थ घराने हैं जो अपने आप को बड़ा और उच्च समझते हैं।'

'यह मतलब नहीं है। जो मालदार हो उनको पूछता हूँ। ऐसे लोग भी बहुत हैं। आप चाहते क्या हैं ?

'कई महीने हुये उस खानदान की एक लड़की तीर्थ यात्रा करने के लिये पुष्कर गई थी। वह वहाँ मुझे मिली थी।'

'तीर्थ में आना जाना तो साधारण बात है। आप अपना मतलब तो कहिये।'

'मैंने उस लड़की से वादा किया था कि बनारस आऊँगा तुझ से मिलूँगा।'

'न नाम न पता ! आप मिलेंगे कैसे ?'

'उसका नाम माया था।'

'वह किसकी लड़की या स्त्री थी ?"

'इस का पता नहीं !'

'फिर मिलना हो चुका। यहाँ कायस्थनियां पर्दे में रहती हैं। किसी से मिलती जुलती नहीं हैं।'

'वह पढ़ी लिखी लड़की थी।'

'महाराज ! कायस्थों में स्त्री पुरुष सब पढ़े लिखे होते है। जब तक आप ठीक ठीक पता न बतायेंगे मुझे तो आशा नहीं है कि आप उसे देख सकेंगे। इसके सिवा बड़े घर की बहू बेटियां अजनबी लोगों से इस तरह नहीं मिला करतीं। आप को धोखा हुआ। आप माया जाल में फँस गये।'

'नौकर नाई था और हँस मुख भी था। पूरब में दस्तूर है जब दामाद ससुर के घर जाता है तो अपने पराये सब उसके साथ हँसी दिल्लगी करते हैं कोई इसे बुरा नहीं मानता। नाई ने कुछ ऐसी हँसी दिल्लगी में यह बातें कहीं कि ब्रह्मासिंह को बहुत ही बुरा लगा। मतलब निकलता हुआ न देखकर चुप हो रहा लेकिन अन्दर ही अन्दर वह माया से मिलने के लिये व्याकुल हो रहा था। वह उसे असाधारण स्त्री समझता था। उसका विचार था कि वह अपने शहर या मुहल्ले में मशहूर होगी। यहाँ पता तक न लगा। कोई ऐसा आदमी भीं नहीं था जिससे वह पूछ गछ करता। क्लर्क बाबू उसका गहरा मित्र बना हुआ था। उसे पता लगाने के लिये कहा लेकिन यह भी वहां अजनबी था। पहिले ही दिन वह निराश हो गया। उसे याद आया, माया ने कहा था:—

'जब तुम अपनी स्त्री के साथ होगे तो मुझ से मिल सकोगे।'

लोग दर्शन स्नान से लौट आये। खाने पीने से छुट्टी मिली। बहूँ सास को पहुँचाने आई। दरवाजे पर पहुँच कर चली गई। उसका इस तरह आना भी बनारस की सभ्यता के विरुद्ध था। माया के बहुत कहने सुनने पर उसके माँ बाप ने उसे सास के पास आकर मिलजुल लेने की आज्ञा दी थी। हां ! स्त्री पुरुष को एक

जगह बैठकर बात चीत करने का अवसर नहीं मिलता। बहू के मन का हाल कौन जान सकता है! लेकिन यह उससे मिलने के लिये उत्सुक हो रहा था क्योंकि इसी से वह भक्तिनी माया का पता पूछना चाहता था। स्त्रियों को स्त्रियों का हाल बहुत मालूम रहता है। इसे आशा थी कि माया से पता लेकर वह पुष्करी माया का दर्शन कर सकेगा।

दो बजे यह फिर सैर के लिये निकले और दिन डूबने के पहिले लौट आये। खाना खाया और सो रहे। दो तीन दिन तक यही दशा रही। ब्रह्मासिंह स्त्री से मिलना चाहता था। उसे माया के दर्शन दर्शन की धुन थी और मिलना हो नहीं सकता था क्योंकि उसके साथ दूसरी स्त्रियाँ भी रहती थीं।

इस तरह दो तीन दिन और बीत गये। जब दुर्गाकुण्ड और विश्वनाथ जी के दर्शन हो चुके सब को इधर से छुट्टी मिलगई और वह बनारस में शहरवालों की तरह रहने लगे। बहू के आने जाने में कमी होते होते यह दशा हो गई कि अब उसका आना नहीं के बराबर हो गया। इसमें उस बेचारी का कोई दोष नहीं था। बनारस का ढंग ही कुछ ऐसा है। शाम को खाना खाने के पीछे ब्रह्मासिंह मां के पास आकर पूछने लगा—'अब तेरी बहू क्यों नहीं आती?

मां बोली—'क्या तू चाहता है कि वह यहां आकर रहे?"

'मैं यह नहीं कहता लेकिन तू देहली में उसकी सेवा की बड़ी प्रशंसा करती थी। यहां तो उसका हजारवां हिस्सा भी देखने में नहीं आता। उसे तेरे पास रहना चाहिये था। वह तो अपने बाप के घर में डटी रहती है और बुलाने पर बादल की छाँव की तरह आई और थोड़ी देर पीछे चली गई।'

'वह यहां स्वतन्त्र नहीं है, मां बाप के आधीन है। वह जैसा

कहते हैं वैसा ही करती है। जब मुस्तकिल तौर पर उसे बुला लिया जायेगा। फिर वहाँ भी उसका आना जाना वैसी ही होजायेगा।'

'मुझे उससे दो बात पूछनी हैं।'

'वह क्या हैं ?'

'पहिली बात तो यह है कि यहां कोई कायस्थ की लड़की ऐसी है जिसका नाम भी माया ही है। वह मुझ से पुस्कर में मिली थी और वाइदा किया था कि जब मैं स्त्री के साथ हूँगा तब वह मुझ से मिल सकेगी। लड़की बड़ी ही ज्ञानी ध्यानी, अनुभवी और समझ बूझ वाली है। मैं चाहता हूं कि तेरी बहू कुछ दिनों उसकी संगत में रहे और मैं भी उसके सत्संग से लाभ उठाऊँ। वह योगाअभ्यासी है।'

'तो अब तुझे योग सीखने की पड़ी है। बिना योग सीखे हुये तू अब तक तो यों ही घर से भागा भागा फिरता है। कहीं योग सीख लिया तो ईश्वर जाने हम दोनों सास बहू की क्या दुर्गति कर देगा।'

ब्रह्मासिंह—'नहीं इस विचार को तू अपने दिल से निकाल दे। मैंने प्रतिज्ञा करली है कि अब चाहे जो कुछ हो कभी कोई काम तेरी इच्छा के विरुद्ध न करूँगा।'

'अच्छा! मैं बहू से पूछूँगी कि यह कौन लड़की है और दूसरी बात क्या है ?'

'तेरी बहू की गोद में एक छोटा बच्चा रहता है। यह किसका लड़का है ?'

'बहू कहती है यह मेरा अपना लड़का है।'

'तेरी बहू का लड़का !'

'हाँ ! मेरी बहू का लड़का और तेरा लड़का। मेरा पोता जिसके लिये मुझे और तेरे बाप को बहुत दिनों से इच्छा थी। ईश्वर ने मेरी

आशा पूरी कर दी। दादा ने तो पोते को नहीं देखा, दादी अभी तक जीती है। उसकी आंखें पोते के देखने से ठंडी होगई।'

'तू यह कहती क्या है ? क्या बावली होगई है ?'

'मैं तो बावली नहीं हुई। तू बावला है। क्या तू ने नहीं देखा वह एक दम तेरी सूरत का है। नाम के लिये भी उसकी और तेरी सूरत में फर्क नहीं है।'

ब्रह्मासिंह की आंखों के सामने अँधेरा छा गया, मुँह पीला पड़ गया और पसीना आ गया।

'यह हो नहीं सकता। और न कभी मुमकिन है।'

'सब्र कर ! जल्दबाजी करके तूने अपने घर भर की जिन्दगी खराब करदी। जो बात कहता है बिना समझे बूझे कहता है। आगे पीछे का तुझे ध्यान तक नहीं रहता।'

'मैं तेरे सामने ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि यह मेरा लड़का नहीं है और न मेरा हो सकता है।'

'और मैं भी तेरे सामने ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि यह तेरा ही लड़का है, किसी और का नहीं है।'

'तेरी बहू को साबित करना होगा।'

'सबूत मेरे पास है। मैं जानती बूझती और समझती हूँ। देख बेटे ! तू ने अपनी थोड़ी सी जिन्दगी में बड़ी-बड़ी गल्तियां की हैं। कहना नहीं चाहिये, बाप को तेरा दुख था। अब मेरी ओर देख ! मैं तेरी मां हूँ। मेरे कहने से तू सब्र से काम ले। इसी में तेरी भलाई है।'

'मैं इस बात को कभी सच नहीं मानूँगा।'

'तू मानेगा और मानना पड़ेगा। यह मैं जानती हूं। तू न मेरी सुनेगा और न बहू की सुनेगा लेकिन जब तेरी योगिनी माया तुझे आकर समझायेगी तब तू मान जायेगा। मैंने इन्दोबस्त कर लिया है। पुष्कर वाली माया यहां ही इसी मुहल्ले में रहती है। तूने अब

तक अपनी जुबान नहीं खोली थी। इसलिये मैं ने इधर ध्यान नहीं दिया। अब तू ने कहा है इसलिये मैं कल ही इसका बन्दोबस्त कर लूँगी। मैं उस माया को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। वह आप आकर समझायेगी तब तो तू मानेगा !'

'वह झूँठी नहीं है। उसने कहा है कि जब तक मैं स्त्री के साथ न हूँगा वह मुझ से न मिलेगी।'

'वह झूँठी नहीं है, सच्ची है। यह तो सहल सी बात है। तू बहू के साथ चल। मैं भी तेरे साथ रहूँगी। पर्दे में बात-चीत होगी। तेरे सिवा और कोई मर्द वहां नहीं रहेगा। पुष्कर वाली योगिनी इस गुत्थी को आप सुलझा देगी।'

'लेकिन जब तक मैं असलियत को न समझूँ तब तक मैं तेरी बहू के साथ कैसे हूँगा।'

'मेरी खातिर, योगिनी से मिलने की खातिर, अपने दिल की शान्ति की खातिर। थोड़ी देर के लिये बहू के साथ रहने में तुझे क्या इन्कार हो सकता है ?'

'यह हो नहीं सकता।'

'अगर यह नहीं हो सकता तो जैसे तेरा बाप दुनिया से चल बसा मैं भी अपने कलेजे में छुरी भोंक कर मर जाऊँगी।'

'क्या तू मुझे बेआबरू करना चाहती है ?'

सुन राजपुत्र ! तू राजपूत है। मैं भी राठौर राजपूतिनी हूँ। तेरा बाप चौहान राजपूत था ; अगर मां बेइज्जत और बेआबरू है तब तो वह अपने लड़के को भी बेहुरमत रक्खेगी और अगर वह असली राजपूतनी है तो याद रख ! जिस तरह क्षत्रानियों ने चित्तौड़ में जौहर कर करके जानें दी हैं वैसे ही तेरी मां भी अपने हाथ से अपने आप और अपनी बेआबरू सन्तान को तलवार के घाट उतार देगी। तू किस भ्रम में पड़ा हुआ है ? अभी तूने असली राजपूत और राज-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

पूतनियों को नहीं देखा। चित्तौड़ गया, उदयपुर हो आया, राजस्थान की सैर की, मेवाड़ के रानाओं के जीवन चरित्र पढ़े लेकिन तुझे राजपूती आन का ज्ञान नहीं हुआ। तू राजपूत है। मैं इसकी साक्षी हूँ। इसी तरह बहू राजपूतिनी है और यह लड़का भी राजपूत है। इसकी भी साक्षी मैं ही हूँ। देख! रात बीत जाने दे। धैर्य और शान्ति से काम ले और दोपहर से पहिले मैं दूध का दूध और पानी का पानी अलग अलग करके दिखा दूँगी।'

'और अगर यह तू साबित न कर सकी तो फिर?'

माँ ने कमर से खंजर निकाली। उसकी आंखें इस समय लाल अँगारा बन गई थीं—'अगर मैं सबूत न दे सकी तो यह खंजर उसी वक्त मेरा खून पियेगा और साथ ही मैं बहू, बेटे और पोते को अपने हाथ से कत्ल कर दूँगी और हमारी मिट्टी काशी से बाहर न जायेगी।'

'तेरी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।'

'क्या मैं झूँठी हूँ?'

'नहीं! मैंने अपने जीवन में तुझे कभी झूंठ बोलते न देखा न सुना। मैं अपने आप को झूँठा कह सकता हूँ तुझे कभी झूँठी न कह सकूँगा।'

'बस! इसी एक बात पर अड़ा रह। सब्र कर। धैर्य से काम ले। रात भर की बात है। सुबह सब कुछ साफ हो जायेगा। यह जिन्दगी और मौत के सवाल का वक्त है। या इधर! या उधर! तूने मुझे बहुत कष्ट दिया। मैंने कभी शिकायत तक नहीं की, सब कुछ सहती चली गई। राम राम करके कल का दिन आने वाला है, कल आयेगा, या तो सब के सब खुश होंगे या मौत की गोद में जाकर आराम से सोयेंगे। घंटों ही का मामला है। मेरे सामने वाइदा कर कि तू इस इम्तहान के लिये तैयार है और कायर की तरह मैदान छोड़ कर भाग न जायेगा। राजपूत है तो राजपूत की तरह इम्तहान

में डट कर खड़ा हो जा।'

'मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल मैं तेरी बात ध्यान के साथ सुनूँगा और फैसला से पहिले कभी कोई ऐसा काम न करूँगा जो तेरी इच्छा के विरुद्ध हो।'

'अच्छा ! सो जा ! तेरे बाप का आत्मा तुझे आशीर्वाद दे और ईश्वर तेरा कल्याण करे !'

# चौथा अध्याय

## क्लर्क बाबू और उसका मालिक

ब्रह्मासिंह सोने के कमरे में गया। क्लर्क बाबू अब तक उसकी राह देख रहा था। उसकी सूरत बदली हुई थी।

क्लर्क ने पूछा—'मिजाज कैसा है ?'

ब्रह्मासिंह—'अच्छा है।'

अच्छा तो नहीं मालुम होता क्योंकि सूरत कुछ और ही कह रही है।'

'बात कुछ ऐसी ही है। मैंने आज आज तक माता जी को क्रोध में नहीं देखा था। वह कुछ झुंझलाई हुई थीं। मुझे भी आज बुरा भला कहा।'

'कारण ?'

'क्या बताऊँ ! घर की बातें नाजुक होती हैं। उन्हें न कोई कहता है और न चुप ही रहता है। मैंने पुष्कर वाली के विषय में पूछा। वह झल्लाकर बोलीं—कल तुम को उससे मिलाऊँगी। उनकी

बातों से कोई बात मेरी समझ में नहीं आई। मैंने हर तरह से उस योगिनी माया के विषय में पूछा पैखी की लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। माता जी न कहीं गईं और न किसी से बात-चीत की। मैंने आज से पहिले उनसे अधिक कभी बात-चीत तक न की थी लेकिन वह मुझ से कहीं अधिक उससे परिचित मालूम होती हैं। कल दोपहर से पहिले मेरी किस्मत का फैसला होगा। मुझ से कसम लिया गया है कि मैं यहाँ से कहीं न जाऊँ।'

'इसमें कोई न कोई गूढ़ रहस्य है।'

'क्या तुमको कुछ पता है ?'

'और तो मैं कुछ नहीं जानता लेकिन जब मैं आज सैर को गया था मैंने शिमला वाली रानी कमलावती को मोटर पर बैठे हुये देखा था। उसके साथ वह ब्राह्मणी भी बैठी हुई थी जिसका मैंने आप से इशारा किया था। रानी यहां क्यों आई और उस गरीब ब्राह्मणी को क्यों साथ लाई इसका मुझे पता नहीं है और इन दोनों में क्या सम्बन्ध है इसे भी मैं नहीं कह सकता।'

'कौन ब्राह्मणी ?'

'आपको याद होगा जिस दिन रानी ने आपका अपमान किया था और आप ने मुझ से कारण पूछा था तो मैंने इतना कहा था कि 'एक ब्राह्मणी आठ नव दिन से बराबर रानी साहिबा से मिलने आती है। कौन जाने वही फसाद की जड़ हो!' यह बात मैंने इशारों में कही थी। आप गहरे सोच में थे, इस पर आप ने ध्यान तक नहीं दिया। मैं चुप हो रहा लेकिन अपने तौर पर जांच पड़ताल करता रहा। उससे पता चला कि उस ब्राह्मणी ने कोई कन्या पाठशाला खोल रक्खी है। उसी की सहायता के लिये रानी को घेरे रहती है। नौकरों से यह भी सुनने में आया कि उससे सौ रुपये ले भी गई थी। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता।'

'क्या यह ब्राह्मणी सूरत शक्ल में पुष्कर वाली माया से मिलती जुलती है ?'

'नहीं ! इन दोनों के रंग रूप में जमीन आसमान का फर्क है। पुष्कर वाली माया इतनी रूपवती नहीं है। यह तो सुन्दरताई के सांचे में ढली हुई है। इसके अंग २ सुडौल और मनोहर हैं। कैसे हो सकता है कि यह पुष्कर गई होती और मैं इसे न पहिचान सकता।'

'विचित्र रहस्य है जो समझ में नहीं आता। तुम ने इसके अन्दर एक और गुत्थी डाल दी। कहां देहली ! कहां बनारस ! कहाँ शिमला ! यह सब के सब एक वक्त में कैसे इकट्ठे हो गये ! यह संयोग वश ऐसा हो रहा है या इसमें सब के सब मिले हुये हैं ?'

'मैं कुछ नहीं कह सकता।'

'रानी कहां ठहरी है ?'

'नन्देश्वर के मुहल्ला महाराजा बनारस की कोठी में उतरी हुई है।'

'इसका पता तुम को कैसे लगा ?'

'मैंने बजार में लोगों से पूछा। पता लगा वह महाराजा बनारस की मेहमान हैं। उनके जो मेहमान बनारस में आते हैं इसी कोठी में ठहरते हैं। यह कोठी राजा साहिब का मेहमान खाना है।'

'तुम रानी से मिल सकते हो ?'

'क्यों ?'

'यह जानने के लिये कि वह क्यों आई हुई है।'

'मैं रानी से तो नहीं मिल सकता क्योंकि उसने मुझे बहुत डांट बताई थी। हां ! उसके आदमियों से मिलकर पता लगा सकता हूँ।'

'अब इसकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी क्योंकि जो कुछ बुरा भला होना है कल दोपहर से पहिले पहिले हो जायेगा। उस वक्त कौन जाने मेरा क्या हाल हो !'

'आप घबराये क्यों हैं ?' जहाँ तक आप की बातों से पता लगता

है माताजी आप को पुष्कर वाली माया से मिलायेंगी, मिल लीजिये। यह तो आप की इच्छा भी है। इसमें घबराहट किस बात की !'

'तुम असल हाल नहीं जानते और मैं खोलकर कह भी नहीं सकता। मेरे सफर में रहने के समय कुछ ऐसी घटनायें हूई हैं जिनकी कभी आशा भी न थी। पन्नालाल जौहरी ने मुझ पर नालिश कर दी थी। माता जी ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ उससे गला छुड़ाया और इस तरह कार्यवाई की गई कि किसी को कानों कान खबर तक न हुई लेकिन इसका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है। इससे अधिक मैं तुम को बताना भी नहीं चाहता।'

नालिश का नाम सुनते ही क्लर्क बाबू की सूरत बिगड़ गई लेकिन उसने अपने आप को सँभाल रक्खा। इस में क्या बात थी अब तक वह पर्दे में थी।

ब्रह्मासिंह ने कहा—'अब तुम जाकर सो रहो। मैं भी सो जाता हूँ। जो होने का है कल होजायेगा।'

और वह अपने अपने कमरों में सो रहे।

# पांचवा अध्याय

## बाप बेटे

ब्रह्मासिंह खाट पर लेटते ही सोगया। नींद दुखियों के लिये बहुत बड़ी बरकत है। निद्रा देवी की गोद में जाते ही जागृत अवस्था के सारे दुख भूल जाते हैं। नींद न होती तो यह संसार नर्क का रूप बन जाता।

आवाज आई—

"पुत्र ! सोता है या जागता है ?"

"पिताजी ! जागता हूँ। क्या हुक्म है ?"

"तू मुझ से अप्रसन्न होगया। मैंने अपनी जायदाद तेरी स्त्री के नाम बसीयत करदी। तू ने मेरे मतलब को नहीं समझा।"

"मैं आपके इस प्रबन्ध से अप्रसन्न तो नहीं हुआ लेकिन यह नहीं पता लगा कि आपकी इससे गरज क्या थी ?"

"तू आत्मा है, बहू माया है। माया माया के पास रहे और तू इससे निर्लेप रहे। यह मेरी पहिली गरज थी। तू उससे अलग रहता था। वह दुखी रहती थी। मैंने अपनी बसीयत करके उसकेआँसू पोंछे हैं। यह दूसरी गरज थी किन्तु यह सम्भव था कि वह उकता कर बाप के घर भाग जाती। इस इन्तजाम से वह जकड़बन्द में रहेगी। यह तीसरी गरज थी। उसने तेरे माँ बाप की सेवा दिल और जान से की थी। प्रेम की सेवा का बदला कोई दे नहीं सकता। जायदाद पाकर सोचेगी। 'जो करे सेवा वह खाये मेवा।' मतलब यह था कि जब तुझे तजुर्वा हो जायेगा तू अपनी स्त्री की कदर करेगा। उस समय वह तेरी वैसी ही सेवा करेगी। यह चौथी गरज थी। धन दौलत पाकर वह सन्तुष्ट रहेगी और तेरी शिकायत न करेगी। यह पांचवीं गरजथी। स्त्रियाँ तीन ही वस्तु चाहती हैं—पति, धन और सन्तान। तू पति है, जायदाद धन दौलत है और वह तुझसे गर्भवती है। बाल बच्चा बाली होगी। इसकी आशा मेरे जीवन में होगई थी। पोते का देखना मेरे भाग्य में नहीं बदा था। क्या हुआ ! कुछ हर्ज नहीं। वह प्रसन्न है। उसका प्रसन्न रखना मेरी छठीं गरज थी। पति का वियोग स्त्री के लिये महा दुखदाई होता है। यह उससे बचाने का एक सहारा था। इसे सातवीं गरज समझ ले। जायदाद और दौलत तेरी है. तुझ से छीनी नहीं गई है। माया तेरी बहू है। तू उसका

क्यों नहीं समझा सकता ! इसका समझाना भी आसान है। यों समझले, जब तू जागता है तब तक जाग्रत की दुनियां में है जिस समय आँखें बन्द होगईं तो स्वप्न की दुनियां है। यह लोक है वह परलोक है। जाग्रत लोक और स्वप्न परलोक है। जाग्रत लोक और मृत्यु परलोक है। इस समानता से तू शायद मेरी बात को समझ जायगा।'

'मैंने समझने को तो समझ लिया और आपने कठिन बात को सुगम करके दिखा दिया। लेकिन यहाँ एक प्रश्न है जो मेरे मन में अभी उत्पन्न हुआ है वह यह है कि जब जाग्रत है तब स्वप्न नहीं और जब स्वप्न है तब जाग्रत नहीं है। आप इस समय स्वर्ग में हैं। फिर आप मुझे दुनियां में देखने कैसे आये ?'

यह कोई पूर्ण नियम नहीं है। प्रायः दुनियां की जाग्रत में आंख के खुले हुये भी लोग स्वप्न के दृश्य देखा करते हैं। और प्रायः स्वप्न में उनसे जाग्रत के काम हुआ करते हैं यह बहुत से लोगों का निजी अनुभव है। प्रायः लोगों ने जाग्रत में स्वप्न अवस्था के दृश्य देखे हैं। जो स्वर्ग हैं। उसी प्रकार चूंकि मेरे दिल में तेरा ख्याल था मैं तुझ से स्वर्ग में रहते हुये बात चीत कर रहा हूँ ?'

'लोग कहते हैं:—दुनियां आकवत की खेती है ? क्या यह विचार ठीक है ?'

निस्सन्देह ठीक है। जैसे जाग्रत का जगत स्वप्न के जगत की खेती है वैसे ही दुनियां आकवत की खेती है। जैसे मनुष्य जाग्रत के काम के फल स्वप्न अवस्था में प्राप्त कर लेते हैं और उसी का स्वप्न देखते हैं, वैसे ही मरे पीछे दुनियाँ के काम के फल स्वर्ग और नर्क में जाकर भोगते हैं।'

"तू अपनी स्त्री को अपना। उसके प्रेम की कदर कर। वह अत्यन्त अमूल्य रत्न है। ऐसी स्त्री बड़े भाग्य से हाथ आती है। तू ने उसकी बेकदरी की। यह बड़ी गलती हुई है। अब गलती की

तलाफी शीघ्र कर और उसके पेट के बच्चे को अपना लड़का स्वीकार कर। तेरी खैरियत इसी बात में है। मैं व्यर्थ ऐसा कह रहा हूँ। कल के दिन अब इसका अन्तिम निर्णय है। यदि तू उसके साथ आराम और प्रसन्नता से रहेगा तो मेरी आत्मा को प्रसन्नता मिलेगी और मैं तुझे यहाँ से दुआ देता रहूँगा। तेरी माता खुश होगी अब उसे बहुत दिनों तक दुनिया में रहना नही है। आज से नवें महीने में इसी बनारस में उसकी मृत्यु होगी। वह दहली जाने को राजी नहीं है।"

"क्या मैं माताजी को यह बात कह सकता हूँ ?"

"तेरे जी में आबे तो कहदे वह तैयार रहेगी और पवित्रता, प्रेम और निष्काम जीवन का अभ्यास करती रहेगो।"

"पिता जी ! आप इस समय स्वर्ग में हो। क्या आपने ईश्वर का दर्शन किया है ? ईश्वर कोई चीज है या योंही उसका ख्याल लौगों को रहता है ?"

"इस बात का कोई उत्तर नहीं मिला। जोर से कहकहा की आवाज सुनाई दी और उसकी आंख खुल गई। माँ सिरहाने खड़ी कह रही थी कि आज तू बहुत देर तक सोया। क्या स्वप्न देख रहा था ? आखिर यह बातें क्या हो रही थीं। ब्रह्मासिंह ने उत्तर दिया। स्वप्न में पिताजी ने दर्शन दिये और कह गये कि नौ महीने बाद तू इसी काशी में शरीर त्यागेगी वह प्रसन्न होगई।

पहिली खबर जो उसने जागने पर सुनी वह यह थी कि क्लर्क बाबू कहीं चले गये। और अपना सामान भी उठा कर लेगये। ब्रह्मा को को सुन कर आश्चर्य हुआ।

———

# पाँचवां भाग

## प्रथम अध्याय

### नन्देश्वर की कोठी

ब्रह्मासिंह की मां ने न्हलाने धुलाने के पश्चात बेटे और कुल साथियों को भोजन कराया। इतने में दस बज गये। समधी की मोटर आई। आप बैठी और अपने साथ बेटे को बिठाया। क्लर्क बाबू तो था ही नहीं। नौकरों में से किसी को साथ नहीं लिया। मोटर ड्रायवर से कह दिया—महाराज बनारस की नन्देश्वर वाली कोठी पर चलो।' वह दस मिनट में वहां पहुंच गये।

यह वही कोठी है जिसमें महाराज बनारस के महमान आकर उतरा करते हैं। उसका उल्लेख पहले आ चुका है। कोठी अच्छी और सुन्दर है। अहाता वड़ा है। जगह जगह नियम से बेल बूटे लगे हुये हैं। आज कल के लोग उसे कम जानते हैं वर्ना पहिले समय में कई ऐतहासिक घटनाओं के साथ इसका सम्बन्ध है।

पहिरे वालों ने सलामी दी। मोटर अहाते में पहुँची। कोठी में जीना के पास दो स्त्रियाँ आगवत के लिये उपस्थित थीं। गाढ़ी से उतरते ही वह उन्हें हाल में लेगई और आप उलटे पांव लौट आईं। हाल की सजावट का क्या कहना था। वह राजाओं के दरबार की तरह सजा हुआ था। शीशों के झाड़ लगे हुए थे। जिस कोठी में यूरुप के वादशाह और भारतबर्ष के वाइसराय आकर ठहरते हैं, उसका अनुभव केवल कल्पना करने से लगता है। प्रिंस आफ वेल्स भी जब भारत में पधारे बनारस देखने गये। इसी में ठहरे थे।

बीच हाल में इस विशेष अवसर पर एक सुन्दर चौकी बिछी

थी जिस पर जरतार का तोशक बिछा हुआ था। और तीन और गांव उसी हैसियत के रक्खे हुए थे। उस पर एक स्त्री गेरुआ वस्त्र पहिने हुये बैठी हुई थी। और दूसरी स्त्रियां हाथ बांधे हुये थोड़ी दूर पर उसके सामने बैठी थी। ऐसा ज्ञात होता था मानों कोई देवी सिंहासन पर बिराजमान है और उसके दो पुजारी सेविकायें सेवा के लिये उपस्थित हैं।

ब्रह्मासिंह ने पहिचान लिया। यह वही पुष्कर वाली मायादेवी थी। माँ बेटे दोनों ने हाथ बाँध कर नमस्कार किया। माया ने केवल होटों की मुस्कराहट से उनके नमस्कार का उत्तर दिया। माया ने हँस कर बैठने का संकेत किया। दोनों बैठ गये।

'तुम आगये ?'

ब्रह्मासिंह ने सम्मान पूर्वक उत्तर दिया—'हां मैं उपस्थित हूं।'

"अच्छा किया। मैं भी बादा के अनुसार मौजूद हूँ। तुम्हारी स्त्री अपने लड़के के साथ दूसरे कमरे में है। वह पहिले आई। यदि वह न आती तो मैं तुमको कभी अपने पास न आने देती।

"आपने बड़ी कृपा की। मुझे आपकी खोज में बड़ी परेशानी उठानी पड़ीं। पता नहीं लगा। यह तो माताजी की दया थी कि आज यहाँ ले आई।'

"ऐसा तो होना ही चाहिये। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जो वस्तु सरलता से हाथ आती है उसकी कदर नहीं की जाती। दुनिया में बदले का नियम सर्व व्यापक है। हर वस्तु का मूल्य देना पड़ता है। मूल्य देने वाला काजी होता है और मुफ्तखोरे मुफ्ती बनते हैं। यह पहिली बात है।

दूसरी बात यह है कि जो वस्तु बहुत निकट रहती है और वह अपनी ही है उस पर किसी की दृष्टि नहीं जाती। जैसे आत्मा शरीर से बहुत निकट है किन्तु दिखाई नहीं आती। मैं तुमसे दूर नहीं हूँ किन्तु दिखाई नहीं आई।"

तीसरी बात यह है कि बिना भेद ज्ञाता गुरु के ईश्वर या देवता का दर्शन आज तक किसी को न हुआ न होता है और न होगा। जब तुमने माताजी को अपना गुरु बना लिया तब सुगमता से मुझे देख सके।

"यह तीन बातें हैं जिनका तुम्हारे शब्दों में मैं पता देती हूँ।

ब्रह्मासिंह इस भावपूर्ण प्रवचन को सुनकर लट्टू हो गया। "मेरे लिये क्या आज्ञा है ?"

माया हँसी—'तुम प्रयोजन लेकर आये हो और मेरी आज्ञा के सुनने की इच्छा करते हो। आश्चर्य है या नहीं ? तुम्हारी इच्छा तुमको यहाँ लाई। यह तुम्हारा काम है कि तुम उसे प्रगट करो। मैं यदि कुछ कहने को भी मान जाऊँ तो तुम्हारी जुबान खुले बिना क्या कह सकती हूँ।'

'आप अन्तरयामी हैं। हृदय की बात जानती हैं।'

'यह सब ठीक ! लेकिन क्या तुमने किसी देवता, हाकिम या किसी और महान व्यक्ति को सवाल से पहिले उत्तर देते हुये देखा है ? यदि देखा या सुना है तो मुझे बता दो। यदि ऐसा अनुभव नहीं हुआ है तो फिर जुबान खोलो। मैं उत्तर दूँगी।'

तुमने यह बात पुष्कर में भी कही थी। मैंने उसका उत्तर दिया था कि तुम्हारे घर और मन में अशान्ति है। शान्ति भी वहां ही मिलेगी। क्या तुम भूल गये ?'

'मैं कुछ भी नहीं भूला। आपकी एक-एक बात मुझे याद है।'

'फिर उस पर अमल क्यों नहीं किया ?'

'बिना समझे बूझे अमल कैसे करता ?'

'यह सरल बात थी। मन में और घर में शान्ति ढूँढ़ते और वह तुमको अब तक कभी की मिल गई होती।'

'मैं इस रहस्य को नहीं समझता।'

क्या माता जी स्पष्ट शब्दों में तुमको देहली से लेकर यहां तक

नहीं कहती चली आ रही है कि शान्ति घर में है। तुम व्यर्थ बाहर मारे-मारे फिर रहे हो। उसकी कदर नहीं करते।'

ब्रह्मासिंह ने सोचना शुरू किया लेकिन जुबान नहीं खुली। तब माया स्वयं ही बोली—

'आश्चर्य की बात है। तुम पढ़े लिखे डबल ग्रेजुएट हो और जरा सी बात भी नहीं समझ सकते। एक जीवित शरीर वाली तुम को कई दिनों से समझा रही है। आकाश तुम्हारी सहायता पर है। आत्मा ने भी स्पष्ट रूप से तुम्हारे हृदयांकित करा दिया। जीवित और मरे दोनों के उपदेश तुमको मिल गये। फिर भी तुम राह पर नहीं आते। यह अंधेर है या नहीं ?'

'मैं क्या करूँ ?'

मां बाप की शिक्षा पर अमल करो। दुनियां में पहिली गुरु माता है। दूसरा गुरु बाप है। फिर दूसरे गुरुओं की बारी आती है। अन्तिम गुरु आचार्य और आत्म-ज्ञानी होता है।'

'मुझे इसी अन्तिम गुरु की लालसा आपके पास लाई।'

'अच्छा हुआ ! लेकिन मैं भी वही उपदेश देती हूँ जो तुमको माँ बाप से पहिले मिल चुका है। अब भी समझे कि नहीं ?'

समझ गया। कई तरह की शंकायें दिल में बाकी हैं। उनके दूर होने से मैं अक्षरस आज्ञा की पाबंदी करूँगा।'

'धन्य है। तुमने इतना तो कहा। अब रास्ता आप ही साफ हो जायगा। और भी कुछ पूछना चाहते हो ?'

पुष्कर में आपने सहजयोग के विषय पर भाषण दिया था। मैं वह आप से सीखना चाहता हूँ।'

देखो जी ! पहिले शब्दों का अभिप्राय समझो पीछे और बात करना। सहज कहते हैं कुदरती को और योग नाम है मिलाप का। कुदरती मिलाप को सहजयोग कहते हैं। मन के सुधार के लिये पहिले

शुरू की बातों की पाबन्दी आवश्यक है ताकि यह मन ठौर ठिकाने आ जाय। इसके पार करने के बाद ऊँची श्रेणियों की शिक्षा शुरू होगी। पहिले मन को तो ठीक करो। पीछे मैं आप तुमको शेष बातें समझा दूँगी।

'ज्ञात नहीं आपका दर्शन भी मुझे मिले मिले या न मिले। इसका विश्वास कैसे हो ?'

माया हँसी—'तुम कूदन शिष्य हो क्षमा करना ! यह जो कुछ हो रहा है स्वयं ईश्वर की ओर से स्वाभाविक रूप से हो रहा है। मैं तुमको ईश्वर की प्रेरणा से मिली हूँ। मैं जाती कहां हूँ। तुम जब मेरे कहने पर चलोगे, मुझे हर समय अपने पास पाओगे।'

मुझ को क्या तू ढूंढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
न मैं काशी न मैं द्वारिका, न मथुरा कैलाश में॥
कहें कबीर सुनो भाई साधो ! मैं सांसों की सांस में।
जब ढूंढ़े तब निकट मिलूँ मैं, छिन भर की तालाश में॥

ब्रह्मासिंह ने कहा—'मेरी सन्तुष्टि हो गई। विश्वास हो गया। आप आवश्यकता के समय मुझे मिल रहोगी। मैं अब अधिक प्रश्न नहीं करता। लेकिन गुरु का कर्तव्य है कि चेले की शंका सन्देहों को मन से दूर करादे।'

'मैंने इन्कार कब किया ? तुम कहो, मैं उत्तर देने को मौजूद हूँ।'

आप सब कुछ जानती समझती हैं। बहुत सी बातें जुबान से नहीं कही जातीं। अदब का ध्यान रहता है। मेरी जुबान न खुले और आप उत्तर देदें।

पूरे गुरु की यह पहिचान।
मन बानी कहें चतुर सुजान॥

माया हँसी—मैं अब जाती हूँ। यदि तुम मुझे गुरु मानते हो और साथ ही अदब और सम्मान का ध्यान है तो मुझे भी तुम्हारे

मानसिक भावों के सम्मान का ध्यान रहेगा। जिससे इस संदेह में मामले का सम्बन्ध है वह स्वयं आयेगी और तुम्हारी संतुष्टि करेगी। मैं क्यों तुम्हारे घरेलू मामलों में शरम दिलाने का कारण बनूँ।'

यह कह पुष्कर वाली माया ब्रह्मासिंह के उत्तर का लिहाज किये बिना उठी। सब उठ खड़े हुये नमस्कार किया। वह कमरे के अन्दर जाकर लोप होगई और दो तीन क्षण के बाद उसकी स्त्री राजपूतनी माया गोद में बच्चे को लिये हुए आई। लड़के को तो सास की गोद में डाल दिया और आप सास का संकेत पाकर स्त्रियों के बीच में चुप चाप सिर नीची किये हुये बैठ गई।

# दूसरा अध्याय

## शंकाओं का निवारण

सब चुप बैठे हैं। केवल पांच आदमी हैं चार स्त्रियां और एक पुरुष! कोई किसी की ओर आँख उठा कर नहीं देखता। अपने अपने ख्याल में सब विलीन हो रहे हैं।

दो चार दस मिनट बीत गये।

ब्रह्मासिंह की माँ बोली—बेटे! अब तूने जो कहना है क्यों नहीं कहता? यह चुप रहने का समय नहीं है।"

ब्रह्मासिंह बोला—"तू आप जानती है। मैं क्या कहूं।"

माँ बहू से बोली—"बेटी! तू मेरी बहू है। यह मेरा बेटा है।

मैं तेरी सास और उसकी माँ हूँ। कुल की बड़ी बूढ़ी होने के नाते से मैं तुम दोंनों की इज्जत और जान व माल की रक्षक हूँ। शर्म न करो। यह मौत और जीवन का प्रश्न है। वह प्रमाण दो जिससे तेरे पति को तेरी सचाई की परीक्षा हो जाये।"

माया की आंखों से शर्म के आंसू जारी हुये। उसने १४ अगूठियां और सात रेशमी रूमाल लाकर सामने रख दिये। यह मेरी सचाई और निर्दोषता का पूर्ण और अटल प्रमाण है।

ब्रह्मासिंह के होश के तोते उड़े। "यह मैंने किसको कहां और किसके सामने दिये थे ?"

"आपने सोमवार से इतबार तक (—···तारीखों तक) क्रमानुसार दिये थे। लेने वाली मैं थी। देने वाले आप थे। रात के समय अंधेरे में आपने दिये थे। ईश्वर के सामने दिये थे और शिमला वाली रानी के बँगले में यह मेरी भेंट किये गये थे।"

"कोई और भी गवाह है ?"

हाँ, दो सहेलियां मेरी गवाह हैं जिनकी साक्षी को दुनियाँ की कोई शक्ति खंडन नहीं कर सकती। आवश्यकता पड़ेगी तो वह अपने रक्त के दस्तखत से साक्षी पत्र के समर्थन करने पर तत्पर होंगी।"

"वह कहां हैं ? तू उन्हें जानती है। क्या मैं उन्हें पहिचानता हूँ ?"

"आप जानकर अनजान बन जायें, यह दूसरी बात है। एक को कम से कम आप पहिचानते है।"

"वह कहां हैं ?"

"एक यह रानी साहिबा शिमला वाली हैं। दूसरी मेरी साथ की खेली हूई यह सखी है।

कमलावती और दूसरी स्त्री माया के साथ जमीन पर बैठी हुई थी। ब्रह्मासिंह के दिल में बेचेनी थी। वह कुछ इतना अशान्त था कि न रानी को आंख उठा कर देखा, न पहिचान सका। माया की

से अब ऐसा दुर्व्यवहार न होगा। यदि मैं देश का राजा होता हजारों और लाखों के सामने खुशी से स्वीकार करता कि तू ताज का 'चमकदार मोती' है।"

माया मुस्कराई और सब लोग प्रसन्न होगये। रानी ने मा को एक मुरसा गुलूबन्द भेंट किया। ब्रह्मासिंह को पहाड़ी कटा दी। सास को रुद्राक्ष की माला भेंट की और छोटे बच्चों के लि पांच सौ रुपया देकर कहा—यह इसके दूध पानी के लिये हैं। प्र की भेंट लेने से किसने इन्कार किया है?' सबने खुशी से लेक सिर पर चढ़ाया।

ब्राह्मणी माया अपने साथ फूलों का टोकरा लाई। पांच हार पाँ को पहनाये और सिर पर फूलों की वर्षा की।

# तीसरा अध्याय

## तितला परिपूरक

कमलावती तीर्थ यात्रा करके शिमला लौट गई। ब्राह्मणी माय का परिवार दहली छोड़ कर बनारस चला आया। राजपूतनी माया ने उसे इतना धन दौलत दिया कि फिर इन लोगों ने दहली जाने का नाम नहीं लिया। ब्राह्मासिंह की ाद बिक गई और बनारस में नई जायदाद मोल लेली गई। शिम ी रानी ने दहली जाकर झूठे जवाहिरात का मुकदमा फिर से च लेकिन जौहरी ने बड़ी बिनती की इसीलिये उसने उसे अद उठा लिया। दस हजार रुपये राजपूतनी माया को वापिस मिल ग क्लर्क बाबू का पता नहीं मिला कि वह कहाँ गया और क्या हुआ। नौ महीने बाद सास ने चोला छोड़ा और माया उसकी जगह पर थी मालिक होगई।

# दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| धर्म प्रकाश हिन्दी | -७५ | नाम दान | १-०० |
| वन उर्फ } हिन्दी | १-०० | सार का सार भाग १,२ | २.७५ |
| रहस्य } उर्दू | -७५ | सचाई उर्दू या हिन्दी | .४० |
| बनो हिन्दी | -७५ | निष्कलंक अवतार हिन्दी | .५० |
| कल्याण हिन्दी | -७५ | मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५ | ५ ०० |
| उभार | १-०० | गरुण पुराण रहस्य | १.०० |
| ीय रचना | .५० | अद्भुत मोती | .७५ |
| वचनामृत | .४० | आजादी की कुंजी | .४० |
| वामी शताब्दी पर मेरी भेंट | | गुरु वन्दना | .६५ |
| १—२ | २-२५ | कबीरसार शब्द व्याख्या | १.०० |
| ग या मौज भाग १ ,२, | १-७५ | शिव फकीर पत्रावली | १.२५ |
| र्षीय फकीर अनुभव | .५० | हृदय उद्गार | १.०० |
| तगुरु वक्त | १-५० | अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति | १.०० |
| ा मार्ग | -२५ | सुरत शब्द योग | १.०० |
| धर्म भाग १ व २ | १-७५ | सत सनातन धर्म अथवा— | |
| महिमा | १-०० | सत मानव धर्म | ३.०० |
| यव पुरुष | १-०० | निर्वाण से परे | १.०० |
| ८३ वर्षीय अनुभव | १-२५ | रचना का भेद | .७५ |
| अन्त | १-२५ | बेहद्दी या अपार के परे | १)२५ |
| तत्व सचाई और शान्ति | १.०० | ईश्वर दर्शन | १) |
| विकाश | १-०० | मेरी धार्मिक खोज | .५० |

# महर्षि शिवव्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिव की जीवनी उर्दू | ५.०० | आत्मिक उत्कर्ष | १.०० |
| योग | ,, २.५० | बिचारांजलि | १.५० |
| कल्पद्रुम | १.५० | मूर्ति पूजा रहस्य | ०.२५ |
| ता के साधन हिन्दी | .५० | सत्य सनातन आर्य धर्म | १.२५ |
| मुखी | .५० | रहिमन नीति दोहावली | .५० |
| सन्देश | ..५० | योग आसन | .२५ |
| रहस्य | १.०० | सप्त ऋषि वृतान्त | .७५ |
| वृतान्त | .७५ | राजस्थान की ललित ललनायें | १.०० |
| जीवन सुधार | ,७५ | सत्संग के ८ वचन | ०.७५ |
| का कल्पद्रुम | १.०० | नन्द भाई की साखी | १.२५ |
| प्ताह विचार | १.५० | हितोपदेश | |

Registered No. L. 15

## महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकों की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पूर्ण महारामायण सजिल्द | ६) | ओ३म् नाविल | २ |
| श्रीमद्भगवद्गीता भाग १–२ | २.५० | झलकदार मोती | २ |
| नानक योग ३ भाग सजिल्द | ४) | गिरहदार मोती | १ |
| राधास्वामी योग ६ भाग सजिल्द | ५) | शाहवार मोती | १ |
| कबीर योग प्रथम भाग | २) | रंगदार मोती | २ |
| " " द्वतीय " | १.७५ | दलदार मोती | २ |
| " " तृतीय " | १.५० | कजदार मोती | २ |
| शरणागति योग | .७५ | शिवजी की अद्भुत कहानी | १ |
| उपासना योग | .७५ | **पाठ तथा गाने के शब्द** | |
| कर्म योग | .७५ | फकीर भजनावली | १. |
| आनन्द योग प्रकाश | २.५० | शब्द गुन्जार भाग १,२,३ | ३. |
| Light on Anand yog | .३) | शब्दों का गुटका | ०. |
| आत्मिक प्रायमर | .५० | नम्द् भाई की साखी | १.२ |
| कबीर आद्यज्ञान प्रकाश | २.०० | कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या | १.० |
| पंथ सन्देश | ३.०० | कबीर शब्दावली | |
| **उपन्यास** | | नैयर आजम प्र० [illegible]० | ४.५ |
| शाही पति परायण | १.०० | मत कबीर की साखी | ७ |
| शाही भूत | १.०० | पि[illegible]ल साखी | |
| शाही डाकू | १.७५ | स्वास्थ्य और भोजन | १ |
| शाही लकड़हारा | २.६० | रा०स्वा०मतप्रकाश वचनसार | |
| शाही जादूगरनी | १.५० | जीवन सुधार | १ |
| शाही भिखारी | २.६० | अनमोल उपदेश | |
| आबदार मोती | १.७५ | विचार दर्पण | |
| ताबदार मोती | १.५० | विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान | |

मिलने का पता—

मैनेजर

**शिव साहित्य प्रकाशन मण्डल** कार्यालय—

पोस्ट दयालनगर, अलीगढ़ उ०प्र० लेखराज नगर, अलीगढ़ (उ०प्र०)

[illegible]चन्द्र मीतल द्वारा दयाल प्रिंटिंग प्रेस, लेखराज नगर, अलीगढ़ में मुद्रित
राघव प्रेस के लिए